Journal
Of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

'भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भमें सूर्य विज्ञानः एक अध्ययन'

Devangkumar A Raval

Junior Research Fellow, DGLL, SII&CS,
Central University of Gujarat, Gandhinagar.
Email. Devang99952@gmail.com

भारतीय ज्ञान परंपरा में आत्मा के साथ-साथ शरीर का भी महिमामंडन किया जाता है। सृष्टि में प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य सुख प्राप्त करना है। इसमें शरीर एक महत्वपूर्ण कारक है। गुजराती में एक कहावत है 'पहेलु सुख ते जाते नर्या '। इस कहावत के अनुसार, मनुष्य के लिए पहला सुख अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य है। भारतीय ज्ञान परंपरा के आयुर्वेद विज्ञानमें शारीरिक स्वास्थ्य केंद्र में है। आयुर्वेद में, रोग के कारणों और इसकी रोकथाम के लिए उपचारों को वैज्ञानिक रूप से सत्यापित किया गया है। आयुर्वेद का मूल स्रोत वेदों से आता है। वेदों से हमें आयुर्वेद के अलावा कृषि विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, रसायन विज्ञान, वास्तु विज्ञान आदि मिलते हैं। इनमें से सबसे कम ज्ञात सूर्य विज्ञान भी वेदों से लिया गया है। आज, बिजली पैदा करने के लिए सौर ऊर्जा का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। हम सभी सौर ऊर्जा के महत्व से अवगत हैं, लेकिन सौर विज्ञान के बारे में बहुत कम जानकारी है। हमें इस विषय पर साहित्य भी बहुत कम मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र के केंद्र में सूर्य विज्ञान है। शोध का पूरा हिस्सा इस बात पर केंद्रित है कि सूर्य विज्ञान में क्या शामिल है, सूर्य की प्रकृति क्या है, सूर्य की किरणों द्वारा उपचार, सूर्य की किरणों और कांच के उपयोग से कुछ बीमारियों का उपचार, और सूर्य विज्ञान से संबंधित अन्य ज्ञान। सूर्य की किरणों के उचित उपयोग से विभिन्न रोगों का शमन संभव है। इसके अलावा, हमारे प्राचीन ग्रंथों ने सूर्य के स्रोत, सूर्य पूजा द्वारा

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

उपचार, सूर्य और उसके वैदिक संबंध को भी यहां शामिल करने का फैसला किया है। इसके अलावा, सूर्य आधारित उपकरण और प्रयोग, उनके डिजाइन और वैज्ञानिकों द्वारा उपयोग आदि वर्तमान शोध पत्र में शामिल हैं। इन सभी मुद्दों को ध्यान में रखते हुए, यह शोध पत्र अपने महत्व को स्थापित करता है।

प्राचीन काल में मनुष्य जंगलों में रहते थे । उन्होंने धीरे - धीरे प्रकृति के करीब रहकर प्रकृति को अपने जीवन शैली में आत्मसात किया और अंततः प्राकृतिक तत्वों को अपना धर्म बनाया । हिंदू धर्म में पाँच मुख्य देवी - देवताओं की पूजा की जाती है । इनमें गणेश , शिव , विष्णु , सूर्य और देवी शामिल हैं । इन पाँच देवी - देवताओं का समुदाय अपने इष्ट की पूजा सृष्टिकर्ता और सर्वशक्तिमान के रूप में करता है । इनमें से सूर्य को सर्वव्यापी मानने वाला पंथ सौर पंथ है । सूर्य पूजा भारत में बहुत शुरुआती समय से प्रचलित है । कश्मीर क्षेत्र , कोणार्क का सूर्य मंदिर (ओडिशा, 13वीं शताब्दी) , गुजरात में प्रभास क्षेत्र और मोढेरा का सूर्य मंदिर , कई अन्य स्थानों के अलावा , सूर्य की पूजा के लिए जाने जाते हैं । सूर्य पूजा न केवल भारत में बल्कि सीरिया , ग्रीस , ईरान और रोम जैसे क्षेत्रों में भी प्रचलित है । मिस्र में सूर्य की पूजा 'रा' के रूप में की जाती है । जर्मन में इसका नाम 'सोल' है , जबकि ग्रीक में इसका नाम 'हेलिओस' है । इस प्रकार , सूर्य उपासना न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर फैली हुई है एसा हम कह शकते है।

शोधकर्ताओं द्वारा यह स्वीकार किया जाता है कि ऋग्वेद सबसे पुराना ग्रंथ है । ऋग्वेद से हमें सूर्य से संबंधित सुक्त मिलता है । जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि सूर्य की पूजा प्राचीन है । एक वैदिक ग्रंथ सूर्य के बारे में इस प्रकार कहता हैः " सूर्य आत्मा

जगतस्तस्थुषश्च चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्रेः |[1] इस श्लोक के अनुसार सूर्य संसार की आत्मा है । " हमारी पूजा प्रणाली में सूर्य को अर्ध्य अर्पित कीया जाता है । जो न केवल पूजा की एक प्रणाली है, बल्कि एक उन्नत विज्ञान भी है । हम अग्नि विद्या का ज्ञान ऋग्वेद से प्राप्त करते हैं । सूर्य विज्ञान अग्नि विद्या का एक हिस्सा है । सूर्य के विज्ञान में सूर्य की प्रकृति , सूर्य की किरणें , सूर्य की किरणों द्वारा रोगों का उपचार आदि शामिल हैं ।

सूर्य के विज्ञान के बारे में कहा जाता है कि “सूर्य का विज्ञान वेद-मन्त्रों में बहुत आया है | वेद सूर्य को ही सब चराचर जगत का उत्पादक कहता है- ‘नूनं जनाः सूर्येण प्रसुतः’ और इसको ही ‘प्राणः प्रजानाम्’ कहा जाता है | बतला चुके है कि सूर्य को इंद्र शब्द से भी वेदों में कहा गया है |”[2] सूर्य का स्वरूप कैसा है? ये प्रश्न का उत्तर हमें इस तरह से प्राप्त होता है की “आकाशमें जितने प्रकाशमान गोले गृह तारे प्रकाशित हो रहे हैं वे सब ‘ब्रघ्नम अरुषं’ महँ अग्निपुंज सूर्य को अपेक्षित करते हैं | इसी मत्व्र “असौ व आदित्यो ब्रघ्नोरूपः (शत. १३/२/६/४/१)” बघ्नो महन्नाम “(नि ३/२) अग्निर्वा अरुषः”(तै.३/९/४/१) इन प्रमाणों से यह सिद्ध होता है की सूर्य आकाश में प्रकाशमान गोलों से भी बड़ा भारी अग्नि का गोला है|”[3] जबकि अमेरिका की प्रतिष्ठित अंतरिक्ष एजेंसी NASA(National Aeronautics and Space Administration) लेकिन वे सूर्य पर शोध करते हैं , वे अपनी वेबसाइट पर कहते हैं । “The sun is a dynamic star,made of super-hot ionized gas called plasma. The sun’s surface and atmosphere change contoinually, driven by the magnetic forces generated by this constantly moving plasma.

[1] ऋग्वेद 10/115/01, यजुर्वेद 7.42

[2] चतुर्वेदी,गिरिधरशर्मा.(१९६०), *वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति,* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना. (पृ.१७०)

[3] आर्ष,प्रियरत्न. (सं.१९९४), *वैदिक सूर्य विज्ञान,* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली. (पृ.८)

The sun releases energy in two ways:the usal flow of light that illumoinates the Earth and makes life possible [:.]NASA studies the sun for numerous reasons."[4] सूर्य के रूप का वर्णन इस प्रकार किया गया है । सूर्य विज्ञान में सूर्य की किरणों का अभ्यास भी शामिल हैं । जिसका संबंध चिकित्सा से भी है । भारतीय ज्ञान परंपरा में हमें आयुर्वेद से संबंधित कई ग्रंथ मिलते हैं । जिसमें चरक संहिता और सुश्रुत संहिता को महत्वपूर्ण माना जाता है । जो स्वस्थ स्वास्थ्य को पहला सुख मानता है, सूर्य विज्ञान का एक भाग चिकित्सा से संबंधित है । सूर्यकिरण थेरेपी प्राकृतिक चिकित्सा में शामिल है । चिकित्सा की इस प्रणाली में , आम तौर पर यह माना जाता है कि शरीर में कोई भी बीमारी सात रंगों में से एक के नुकसान के कारण होती है । शरीर के अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए सभी सातों रंगों का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है । सूर्य की किरणें भी सात रंगों से बनी होती हैं । इंद्रधनुष में सात रंग होते हैं । "सूर्य किरणों के सातों रंग यह हैं-(१) बैंगनी (२)नीला (३)आसमानी(४)हरा (५)पिला(६)नारंगी (७)लाल | यह तो सब जानते है की असल में लाल,पिला और नीला तिन ही रंग है | अन्य रंग इसके आपसी मिश्रण से बनते हैं |"[5] इस प्रकार सात रंगों का वर्णन किया गया है । जिसका सीधा संबंध हमारे स्वास्थ्य से है । सूर्य किरण चिकित्सा को बहुत ही सरल तरीके से लागू किया जाता है जिसमें चिकित्सक द्वारा जिस रंग की कमी पाई जाती है , उसे सूर्य की किरणों की मदद से पानी या तेल की एक गिलास बोतल में रंग मिलाकर रोगी को दिया जाता है , जिससे रोगी की बीमारियां ठीक हो जाती हैं । यह विधि भी बहुत सरल और सस्ती है । आज , जब बीमारियाँ बढ़ रही हैं , तो महंगे इलाज के बीच इस प्रकार की चिकित्सा बहुत

[4] https://science.nasa.gov/heliophysics/focus-areas/solar-science/

[5] *सूर्य चिकित्सा विज्ञानं,* गायत्री परिवार हरिद्वार. (पृ.१२)

मददगार साबित हो सकती है । उपचार की यह विधि इस प्रकार है " सूर्य चिकित्सा में रंगीन काँचो का कई प्रकार से प्रयोग किया जाता है | पीड़ित स्थान पर समस्त शारीर पर रंगीन रौशनी दी जाती है | किसी एक स्थान पर रौशनी देने के लिए एक-एक फूट लम्बा चौड़ा शीशा लेना चाहिए | इसके किनारों पर चौखट जड़वा लिया जाए और दोनों तरफ पकड़ने के लिए दस्ते लगे हों, यदि चटकनीदार चौखट बनवाया जाए तो एक ही चौखट में आवश्यकतानुसार बदल-बदल कर काँच लगाए जा सकते हैं, अन्यथा सब रंग के काँच अलग-अलग चौखटों में फिट होने चाहिए |"[6]. आधुनिक समय में , रंग चिकित्सा को (Chromotherapy) भी कहा जाता है । इस प्रकार की चिकित्सा को आज आधुनिक विज्ञान द्वारा भी स्वीकार और मान्यता प्राप्त है । आयुर्वेद विशेषज्ञ मुझे बताते हैं कि शरीर में सात चक्र होते हैं । ये सात चक्र विभिन्न रंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं । माना जाता है कि इन रंगों की कमी से बीमारियां होती हैं । जब शरीर में बीमारियाँ होती हैं , तो हमारा स्वास्थ्य बेहतर हो जाता है यदि घटते रंग को संतुलित किया जाए । "સૂર્યચિકિત્સાશાસ્ત્રીને બીમાર શરીરમાં જે રંગોની ઉણપ દેખાય છે ત્યાં તેમને પહોંચાડે છે. આ રંગોને તે સૂર્યનાં કિરણોમાંથી મેળવે છે. રંગીન કાયમનથી એક જ રંગનાં કિરણો પસાર થઈ શકે છે અને બાકીના રંગોનાં કિરણો બહાર જ રહી જાય છે. એટ્લે રંગીન કાયનો જરૂરિયાત પ્રમાણે ઉપયોગ કરીને એના દ્વારા જરૂરી રંગ મેળવી શકાય છે. બીમાર ભાગ પર રંગીન કાય દ્વારા શેક આપવો તે આ જ સિધ્ધાંત પર આધારિત છે."[7]

[6] वहीं (पृ.२१)

[7] બ્રહ્મવર્ચસ,(૨૦૧૯) *સૂર્યસાધના.* યુગનિર્માણ યોજના વિસ્તાર ટ્રસ્ટ, મથુરા.(પૃ.૧૯)

इसके अलावा हमें सूर्य स्तोत्र द्वारा ठीक की जा रही बीमारियों के उदाहरण भी मिलते हैं । ज्योतिष में भी सूर्य ग्रह को स्वास्थ्य का ग्रह माना जाता है । शास्त्र सूर्य देवता के लिए किए जाने वाले स्वास्थ्य के कार्य के बारे में भी बताते हैं । श्रीकृष्ण और जांबवती के पुत्र का नाम शांब था । एकवर दुर्वासा मुनि ने उन्हें अपराधबोध के कारण कुष्ठ रोग होने का श्राप दिया था, कई उपचारों के बाद भी कुष्ठ रोग ठीक नहीं हुआ था । अंत में , श्री कृष्ण ने सूर्य की पूजा करने के लिए कहा । सूर्य की पूजा से कुष्ठ रोग ठीक हो जाता है । प्रसिद्ध रचना ' शांबपंचाशिका ' सूर्य उपासना को समर्पित है । इसके अलावा , हम अथर्ववेद के तहत " सूर्योदय " भी पाते हैं । भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में सूर्य उपासना का बहुत महत्व है ।

वैश्वीकीकरण के प्रभाव में चिकित्सा विज्ञान में भी शोध शुरू हुआ और 19वीं शताब्दी के अंत तक यह साबित हो गया कि हमें सूर्य की किरणों से बहुत महत्वपूर्ण विटामिन - डी मिलता है । Heliotherapy नाम प्रणाली का जन्म हुआ था । “Heliotherapy is the use of natural sunlight for the treatment of certain skin conditions. It is a form of phototherapy. It is also called climate therapy.”[8] सूर्य की किरणों का उपयोग आधुनिक चिकित्सा में भी होने लगा था । पेरिस में Institute Of Actinology के डॉ. जीन सेडमैन ने शोध किया । वर्ष 1992 में , वे “rotating solarium” नाम से पेटन्ट का नामांकन किया “The first rotating solarium went up in 1930 on the French community of Aix-les-Bains located in the Savoy Alps. Designed by architect Andre Fadre,[…]In 1934, saidman built two more solariums one in Vallauris, in Alpes-Maritimes, France, and another

[8] https://dermnetnz.org/topics/heliotherapy

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

one in Jamanagar in the Indian state of Gujarat."[9] सोलेरियम संधिशोथ rheumatism(સંધિવા), , डर्मेटाइटिस dermatitis(ત્વચાનાં રોગો) , तपेदिक tuberculosis(क्षय) , रिकेट्स , कैंसर cancer(કેન્સર) जैसी बीमारियों के इलाज में मदद करता है । द्वितीय विश्व युद्ध में दोनों फ्रांसीसी सोलरीयम को नष्ट कर दिया गया है , जबकि आज जामनगर में एकमात्र जीवित सोलरियम है, लेकिन जो अब काम करने की स्थिति में नहीं है । इसे ध्यान में रखते हुए , शोध करके इसे शुरू करने का प्रयास किया जाना चाहिए । . इस तरह, यदि सूर्य की किरणों का उपयोग करके रोगों का इलाज किया जाता है , तो कई जटिल नैदानिक प्रक्रियाओं से छुटकारा पाया जा सकता है । इस संबंध में उचित कार्रवाई की जानी चाहिए । इसके अलावा आप सभी आज सूर्य की किरणों से बिजली पैदा करने के बारे में जानते हैं । आज सौर पैनलों की मदद से बहुत बड़ी मात्रा में बिजली का उत्पादन होता है । इसी तरह , सूर्य की किरणों को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए सूर्य विज्ञान पर और अधिक शोध किया जाना चाहिए ।

इसके अलावा , हमें वेदों से सूर्य के संदर्भ भी मिलते हैं । रामायण से 'आदित्यह्रदय' , भविष्यपुराण से 'सूर्यसहस्रनाम' , महाभारत से एक सौ आठ नामों के अलावा हमें 'सूर्यअष्टक' स्तोत्र भी प्राप्त होता है । महर्षि भरद्वाज द्वारा रचित 'यंत्रसर्वस्वम' सौर - संबंधित वैमानिकी के बारे में बात करता है । इसके अलावा, सूर्य और नक्षत्र किरणों के बारे में जानकारी महर्षि भारद्वाज के 'अंशुबोधिनी' ग्रंथ में भी मिलती है । इस प्रकार वेद, पुराण और अन्य शास्त्र भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल वाहक हैं ।

[9] amsuingplanet.com/2019/07/the-rotating-solarium-of-jean-saidman.html?m=1

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

आज सौर ऊर्जा व्यापक रूप से सौर पैनलों के माध्यम से विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित हो रही है, इस पूरी प्रक्रिया में सूर्य की किरणें मुख्य हैं । सूर्य के बारे में बहुत कम ज्ञान विज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया गया है । इस क्षेत्र में और अधिक शोध की आवश्यकता है । हम सूर्य की किरणों के माध्यम से उपचार और ऊर्जा परिवर्तन के बारे में जानते हैं , लेकिन इसके अलावा हमें यह सोचना होगा कि सूर्य की किरणों के उपयोग से मानव जाति की कैसे मदद की जा सकती है ।